नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[२९] संस्तारकं

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

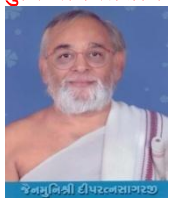

जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संथारंमि निबद्धं गुणपरिवाडिं निसामेह ॥१॥५८७॥ एस किराराहणया एस किर मणोरहो सुविहिआणं। एस किर पच्छिमंते पडागहरणं सुविहियाणं ॥२॥ भूईगहणं जह नक्कयाण अवमाणयं अवज्झा(वऽझा)णस्स। मल्लाणं च पडागा तह संथारो सुविहिआणं ॥ ३ ॥ पुरिसवरपुंडरीओ अरिहा इव सव्वपुरिससीहाणं। महिल्लाण भगवईओ जिणजणणीओ जयंमि जहा ॥ ४ ॥ वेरुलिउव्व मणीणं गोसीसं चंदणं व गंधाणं। जह व रयणेसु वइरं तह संथारो सुविहिआणं ॥ ५ ॥ वंसाणं जिणवंसो सव्वकुलाणं च सावयकुलाइं। सिद्धिगई य गईणं मुत्तिसुहं सव्वसुक्खाणं ॥६॥ धम्माणं च अहिंसा जणवयवयणाण साहुवयणाइं। जिणवयणं च सुईणं सुद्धीणं दंसणं च जहा ॥ ७॥ कल्लाणं अब्भुदओ देवाणं दुल्लहं तिहुअणंमि। बत्तीसं देविंदा जं तं झायंति एगमणा ॥ ८॥ लद्धं तु तए एयं पंडिअमरणं तु जिणवरक्खायं। हंतृण कम्ममल्लं सिद्धिपडागा तुमे लद्धा ॥९॥ झाणाण परमसुक्कं नाणाणं केवलं जहा नाणं। परिनिव्वाणं च जहा कमेण भणिअं जिणवरेहिं ॥ १० ॥ सव्वुत्तमलाभाणं सामन्नं चेव लाभ मन्नंति। परमुत्तम तित्थयरो परमगई परमसिद्धुत्ति ॥ १ ॥ मूल तह संजमो वा परलोगरयाण किलिट्ठकम्माणं। सव्वुत्तमं पहाणं सामन्नं चेव मन्नंति ॥ २ ॥ लेसाण सुक्कलेसा निअमाणं बंभचेरवासो अ। गुत्तिसमिई गुणाणं मूलं तह संजमोवाओ ॥ ३ ॥ सव्वुत्तमतित्थाणं तित्थयरपयासिअं जहा तित्थं। अभिसेउव्व सुराणं तह संथारो सुविहियाणं ॥ ४ ॥ सिअकमलकल्लससत्थिअनंदावत्तवरमल्लदामाणं। तेसिंपि मंगलाणं संथारो मंगलं अहिअं (प्र० पढमं) ॥ ५ ॥ तवअग्गि नियमसुरा जिणवरनाणा विसुद्धपत्थयणा। जे निव्वहंति पुरिसा संथारगइंदमारूढा ॥ ६ ॥ परमट्ठो परमउलं परमाययणंति परमकप्पुत्ति। परमुत्त-मतित्थयरो परमगई परमसिद्धित्ति ॥७॥ ता एयं तुमि लद्धं जिणवयणामयविभूसियं देहं। धम्मरय णामया ते पडिया भवणंमि वसुहारा ॥८॥ पत्ता उत्तमपुरिसा कल्लाणपरंपरा परमदिव्वा। पावयण साहु धीरं (धीरी) कयं च ते अज्ज सप्पुरिसा ! ॥ ९ ॥ सम्मत्तनाणदंसणवररयणा नाणतेअसंजुत्ता। चारित्तसुद्धसीला तिरयणमाला तुमे लद्धा ॥ २० ॥ सुविहियगुणवित्थारं संथारं जे लहंति सप्पुरिसा। तेसिं जियलोगसारं रयणाहरणं कयं होइ ॥ १ ॥ तं तित्थं तुमि लद्धं जं पवरं सव्वजीवलोगंमि। ण्हाया जत्थ मुणिवरा निव्वाणमणुत्तरं पत्ता ॥ २ ॥ आसवसंवरनिज्जर तिन्निवि अत्था समाहिया जत्थ। तं तित्थंति भणंती सीलव्वयबद्धसोवाणा ॥ ३ ॥ भंजिय परीसहचमूं उत्तमसंजमबलेण संजुत्ता। भुंजंति कम्मरहिआ निव्वाणमणुत्तरं रज्जं ॥ ४ ॥ तिहु-अणरज्जसमाहिं पत्तोऽसि तुमं हि समयकप्पंमि। रज्जाभिसेयमउलं विउलफलं लोइ विहरंति ॥५॥ अभिनंदइ मे हिअयं तुब्भे मुक्खस्स साहणोवाओ। जं लद्धो संथारो सुविहिअ! परमत्थनित्थारो ॥ ६ ॥ देवावि देवलोए भुंजंता बहुविहाइं भोगाइं। संथारं चिंतंता आसणसयणाइं मुंचंति ॥७॥ चंदुव्व पिच्छणिज्जो सूरो इव तेअसा विदिप्पंतो। धणवंतो गुणवंतो

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिमवंतमंहतविक्खाओ ॥८॥ गुत्तीसमिइउवेओ संजमतवनिअमजोगजुत्तमणो। समणो समाहिअमणो दंसणनाणे अणन्नमणो ॥९॥ मेरुव्व पव्वयाणं सयंभुरमणुव्व चेव उदहीणं।
चंदो इव ताराणं तह संथारो सुविहिआणं ॥३०॥ भण केरिसस्स भणिओ संथारो केरिसे व अवगासे। उक्खंपिगस्स करणं एअं ता इच्छिमो नाउं ॥१॥ हायंति जस्स जोगा जरा अ
विविहा अ हुंति आयंका। आरुहइ अ संथारं सुविसुद्धो तस्स संथारो ॥२॥ जो गारवेण मत्तो निच्छइ आलोअणं गुरुसगासे। आरुहइ अ संथारं अविसुद्धो तस्स संथारो ॥३॥ जो पुण
पत्तब्भूओ करेइ आलोअणं गुरुसगासे। आरुहइ अ० सुवि० ॥४॥ जो पुण दंसणमइलो सिढिलचरित्तो करेइ सामन्नं। आरु० अवि० ॥५॥ जो पुण दंसणसुद्धो आयचरित्तो करेइ साम-
न्नं। आरु० सुवि० ॥६॥ जो रागदोसरहिओ तिगुत्तिगुत्तो तिसल्लमयरहिओ। आरुहइ०, सुवि० ॥७॥ तिहिं गारवेहिं रहिओ तिदंडपडिमोयगो पहिअकित्ती। आरुहइ० सुवि० ॥८॥
चउविहकसायमहणो चउहिं विकहाहिं विरहिओ निच्चं। आरुहइ०, सुवि० ॥९॥ पंचमहव्वयकलिओ पंचसु समिईसु सुट्ठु आउत्तो। आरुहइ०, सुवि० ॥४०॥ छक्काया पडिविरओ
सत्तभयट्ठाणविरहिअमईओ। आरुहइ०, सुवि० ॥१॥ अट्ठमयट्ठाणजढो कम्मट्ठविहस्स खवणहेउत्ति। आरुहइ०, सुवि० ॥२॥ नवबंभचेरगुत्तो उज्जुत्तो दसविहे समणधम्मे। आरुहइ०
सुवि० ॥ ३ ॥ जुत्तस्स उत्तमट्ठे मलियकसायस्स निव्वियारस्स। भण केरिसो उ लाभो संथारगयस्स समणस्स? ॥ ४ ॥ जुत्तस्स उत्तमट्ठे मलियकसायस्स निव्वियारस्स। भण केरिसं
च सुक्खं संथारगयस्स खमगस्स ? ॥५॥ पढमिल्लगंमि दिवसे संथारगयस्स जो हवइ लाभो। को दाणि तस्स सक्को अग्घं काउं अणग्घस्स ॥६॥ जो संखिज्जभवट्ठिइ सव्वंपि खवेइ सो
तहिं कम्मं। अणुसमयं साहुपयं साहू वुत्तो तहिं समए ॥७॥ तणसंथारनिसन्नोऽवि मुणिवरो भट्ठरागमयमोहो। जं पावइ मुत्तिसुहं कत्तो तं चक्कवट्टीवि ?, ॥८॥ तप्पु (नियपु) रिसना-
डयंमिवि न सा रई तह सहत्थवित्थारे। जिणवयणंमिवि सा ते हेउसहस्सोवगूढंमि ॥९॥ जं रागदोसमइअं सुक्खं जं होइ विसयमईयं च। अणुहवइ चक्कवट्टी न होइ तं वीअरागस्स
॥५०॥ मा होउ वासगणया न तत्थ वासाणि परिगणिज्जंति। बहवे गच्छं वुत्था जम्मणमरणं च ते खुत्ता ॥१॥ पच्छावि ते पयाया खिप्पं काहिंति अप्पणो पत्थं। जे पच्छिमंमि काले
मरंति संथारमारूढा ॥२॥ नवि कारणं तणमओ संथारो नवि अ फासुआ भूमी। अप्पा खलु संथारो हवइ विसुद्धे चरित्तंमि ॥३॥ निच्चंपि तस्स भावुज्जुअस्स जत्थ व जहिं व संथारो।
जो होइ अहक्खाओ विहारमब्भुट्ठिओ लूहो ॥४॥ वासारत्तंमि तवं चित्तविचित्ताइ सुट्ठु काऊणं। हेमंते संथारं आरुहइ सव्वऽवत्थासु ॥५॥ आसीअ पोअणपुरे अज्जा नामेण पुप्फ-
चूलत्ति। तीसे धम्मायरिओ पविस्सुओ अन्निआउत्तो ॥६॥ सो गंगमुत्तरंतो सहसा उस्सारिओ अ नावाए। पडिवन्नउत्तिमट्ठं तेणवि आराहिअं मरणं ॥७॥ पंचमहव्वयकलिआ पंच-
सया अज्जया सुपुरिसाणं। नयरंमि कुंभकारे कडगंमि निवेसिआ तइआ ॥८॥ पंचसया एगूणा वायंमि पराजिएण रुट्ठेणं। जंतंमि पावमइणा छुन्ना छन्नेण कम्मेण ॥९॥ निम्मम-
निरहंकारा निअयसरीरेवि अपडिबद्धा उ। तेवि तह छुज्जमाणा पडिवन्ना उत्तमं अट्ठं ॥६०॥ दंडुत्ति विस्सुअजसो पडिमादसधारओ ठिओ पडिमं। जउणावंके नयरे सरेहिं विद्धो सयं-
गीओ ॥१॥ जिणवयणनिच्छिअमई निअयसरीरेऽवि अपडिबद्धो उ। सोऽवि तह विज्झमाणो पडिवण्णो उत्तमं अट्ठं ॥२॥ आसी सुकोसलरिसी चाउम्मासस्स पारणादिवसे। ओरुह-
माणो य नगा खइओ मायाइ वग्घीए ॥ ३ ॥ धीधणियबद्धकच्छो पच्चक्खाणम्मि सुट्ठु उवउत्तो। सो तहवि खज्जमाणो पडि० ॥ ४ ॥ उज्जेणीनयरीए अवंतिनामेण विस्सुओ
आसी। पाओवगमनिवन्नो सुसाणमज्झम्मि एगंते ॥५॥ तिन्नि रयणीइ खइओ भल्लुंकी रुट्ठिया विकड्ढंती। सोवि तह खज्जमाणो पडि० ॥६॥ जल्लमलपंकधारी आहारो सीलसं-
जमगुणाणं। अज्जीरणो य गीओ कत्तिय अज्जो सुरवरंमि ॥७॥ रोहीडगंमि नयरे आहारं फासुयं गवेसंतो। कोवेण खत्तिएण य भिन्नो सत्तिप्पहारेणं ॥८॥ एगंतमणावाए विच्छिन्ने
थंडिले चइय देहं। सोऽवि तह भिन्नदेहो पडि० ॥९॥ पाडलिपुत्तंमि पुरे चंदयगुत्तस्स चेव आसीय। नामेण धम्मसीहो चंदसिरिं सो पयहिऊणं ॥७०॥ कुल्लउरंमि पुरवरे अह सो
अब्भुट्ठिओ ठिओ धम्मे। कासीअ गिद्धपट्ठं पच्चक्खाणं विगयसोगो ॥१॥ अह सोवि चत्तदेहो तिरिअसहस्सेहिं खज्जमाणो अ। सोऽवि तह खज्जमाणो पडि० ॥२॥ पाडलिपुत्तंमि पुरे
चाणक्को नाम विस्सुओ आसी। सव्वारंभनिअत्तो इंगिणिमरणं अह निवन्नो ॥३॥ अणुलोमपूअणाए अह से सत्तू जओ डहइ देहं। सो तहवि डज्झमाणो पडि० ॥४॥ गुट्ठयपाओवगओ
सुबंधुणा गोमये पलिवियंमि। डज्झंतो चाणक्को पडि० ॥५॥ काइंदीनयरीए राया नामेण अमयघोसुत्ति। तो सो सुअस्स रज्जं दाऊणं इह चरे धम्मं ॥६॥ आहिंडिऊण वसुहं सुत्तत्थ-
विसारओ सुअरहस्सो। काइंदिं चेव पुरिं अह पत्तो विगयसोगो सो ॥७॥ नामेण चंडवेगो अह से पडिछिंदइ तयं देहं। सो तहवि छिज्जमाणो पडिवन्नो० ॥८॥ कोसंबीनयरीए ललि-
अघडा नाम विस्सुआ आसी। पाओवगमनिवन्ना बत्तीसं ते सुअरहस्सा ॥९॥ जलमज्झे ओगाढा नईइ पूरेण निम्ममसरीरा। तहवि हु जलदहमज्झे पडिवन्ना० ॥८०॥ आसी कुणा-
ण(णाल)नयरे राया नामेण वेसमणदासो। तस्स अमच्चो रिट्ठो मिच्छादिट्ठी पडिनिविट्ठो ॥१॥ तत्थ य मुणिवरवसहो गणिपिडगधरो तहासि आयरिओ। नामेण उसहसेणो सुअसायरपारगो
धीरो ॥ २ ॥ तस्सासी अ गणहरो नाणासत्थत्थगहिअपेआलो। नामेण सीहसेणो वायंमि पराजिओ रुट्ठो ॥ ३ ॥ अह सो निराणुकंपो अग्गिं दाऊण सुविहिअपसंते। सो तहवि (२३१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागर

डज्झ० ॥४॥ कुरुदत्तोऽवि कुमारो सिंबलिफालिव्व अग्गिणा दड्ढो। सो तहवि डज्झ० ॥५॥ आसी चिलाइपुत्तो मुइंगुलिआहिं चालणिव्व कओ। सो तहवि ख० ॥६॥ आसी गयसुकुमालो अहयचम्मंव कीलयसएहिं। धरणीअले उविद्धो तेणवि आराहिअं मरणं ॥७॥ मंखलिणावि य अरहओ सीसा तेअस्स उवगया दड्ढा। ते तहवि डज्झ० ॥८॥ परिजाणई तिगुत्तो जावज्जीवाइ सव्वमाहारं। संघसमवायमज्झे सागारं गुरुनिओगेणं ॥९॥ अहवा समाहिहेउं करेइ सो पाणगस्स आहारं। तो पाणगंपि पच्छा वोसिरइ मुणी जहाकालं ॥१०॥ खामेमि (ति) सव्वसंघं संवेगं सेसगाण कुणमाणो। मणवइजोगेहिं पुरा कयकारिअअणुमए वावि ॥१॥ सव्वे अवराहपए एस खमावेमि अज्ज निस्सल्लो। अम्मापिऊसरिसया सव्वेऽवि खमंतु मह जीवा ॥२॥ धीरपुरिसपण्णत्तं सप्पुरिसनिसेविअं परमघोरं। धन्ना सिलायलगया साहंती उत्तमं अट्ठं ॥३॥ नारयतिरिअगईए मणुस्सदेवत्तणे वसंतेणं। जं पत्तं सुहदुक्खं तं अणुचिंते अणन्नमणो ॥४॥ नरएसु वेअणाओ अणोवमाओ असायबहुलाओ। कायनिमित्तं पत्तो अणंतखुत्तो बहुविहाओ ॥५॥ देवत्ते मणुअत्ते पराभिओगत्तणं उवगएणं। दुक्खपरिकिलेसकरी अणंतखुत्तो समणुभूआ ॥६॥ तिरिअगइं अणुपत्तो भीममहावेअणा अणोअरया (यारा)। जम्मणमरणऽरहट्टे अणंतखुत्तो परिब्भमिओ ॥७॥ सुविहिअ! अईयकालं अणंतकालं तु आगयगएणं। जम्मणमरणमणंतं अणंतखुत्तो समणुभूओ ॥८॥ नत्थि भयं मरणसमं जम्मणसरिसं न विज्जए दुक्खं। जम्मणमरणायंकं छिंद ममत्तं सरीराओ ॥९॥ अन्नं इमं सरीरं अन्नो जीवत्ति निच्छयमईओ। दुक्खपरिकिलेसकरं छिंद० ॥१००॥ जावंति केइ दुक्खा सारीरा माणसा व संसारे। पत्तो अणंतखुत्तो कायस्स ममत्तदोसेणं ॥१॥ तम्हा सरीरमाई सब्भितर बाहिरं निरवसेसं। छिंद ममत्तं सुविहिअ! जइ इच्छसि उत्तमं ठाणं ॥२॥ जगआहारो संघो सव्वो मह खमउ निरवसेसंपि। अहमवि खमामि सुद्धो गुणसंघायस्स संघस्स ॥३॥ आयरिय उवज्झाए सीसे साहम्मिए कुलगणे य। जे मे केइ कसाया सव्वे तिविहेण खामेमि ॥४॥ सव्वस्स समणसंघस्स भयवओ अंजलिं करिय सीसे। सव्वं खमावइत्ता अहमवि खामेमि सव्वस्स ॥५॥ सव्वस्स जीवरासिस्स भावओ धम्मनिहियनियचित्तो। सव्वं खमावइत्ता अहयंपि खमामि सव्वेसिं ॥६॥ इय खामिआइआरो अणुत्तरं तवसमाहिमारूढो। पप्फोडंतो विहरइ बहुविहबा(प्र० आयविवा)हाकरं कम्मं ॥७॥ जं बद्धमसंखिज्जाहिं असुभभवसयसहस्सकोडीहिं। एगसमएण विहुणइ संथारं आरुहंतो य ॥८॥ इह तह विहारिणो से विग्घकरी वेयणा समुट्ठेइ। तीसे विज्झवणाए अणुसट्ठिं दिंति निज्जवया ॥९॥ जइ ताव ते मुणिवरा आरोवियवित्थरा अपरिकम्मा। गिरिपब्भारविलग्गा बहुसावयसंकडं भीमं ॥११०॥ धीधणियबद्धकच्छा अणुत्तरविहारिणो समक्खाया। सावयदाढगयाविहु साहंती उत्तमं अट्ठं ॥१॥ किं पुण अणगारसहायगेहिं धीरेहिं संगयमणेहिं। नहु नित्थरिज्जइ इमो संथारो उत्तमं अट्ठं ॥२॥ उच्छूढसरीरघरा अन्नो जीवो सरीरमन्नंति। धम्मस्स कारणे सुविहिया सरीरंपि छड्डंति ॥३॥ पोराणिया पवुप्पन्निया उ अहियासिऊण वियणाओ। कम्मकलंकलवल्लीं विहुणइ संथारमारूढो ॥४॥ जं अन्नाणी कम्मं खवेइ बहुआहिं वासकोडीहिं। तं नाणी तिहिं गुत्तो खवेइ ऊसासमित्तेणं ॥५॥ अट्ठविहकम्ममूलं बहुएहिं भवेहिं संचियं पावं। तं नाणी० ॥६॥ एवं मरिऊण धीरा संथारंमि उ गुरू पसत्थंमि। तइअभवेण व तेण व सिज्झिज्जा खीणकम्मरया ॥७॥ गुत्तीसमिइगुणड्ढो संजमतवनिअमकरणकयमउडो। सम्मत्तनाणदंसणतिरियणसंपाविअमहग्घो ॥८॥ संघो सइंदयाणं सदेवमणुआसुरम्मि लोगम्मि। दुल्लहतरो विसुद्धो तो सुविसुद्धो महामउडो ॥९॥ डज्झंतेणवि गिम्हे कालसिलाए कवल्लिभूआए। सूरेण व चंडेण व किरणसहस्संपयंडेण ॥१२०॥ लोगविजयं करिंतेण तेण झाणोवउत्तचित्तेणं। परिसुद्धनाणदंसणविभूइमंतेण चित्तेणं ॥१॥ चंदगविज्झं लद्धं केवलसरिसं समाउ परिहीणं। उत्तमलेसाणुगओ पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥२॥ एवं मए अभिथुआ संथारगईदखंधमारूढा। सुसमणनरिंदचंदा सुहसंकमणं सया दिंतु ॥३॥ (२०-७०९) संथारगपइण्णयं समत्तं ६॥